हिन्दी दैनिक समाचार

विशाल प्रदेश

RNI No. UPHIN/2007/23059

प्रधान सम्पादक- मोहम्मद नासिर

कानपुर का लोकप्रिय समाचार पत्र

वर्ष : 15 | अंक : 77 | शुक्रवार 09 अप्रैल 2021 | पृष्ठ : 8 | मूल्य : 2.00

चारा वैज्ञानिक डॉ हरीश चंद्र सिंह ने गर्मियों में बहुकटान वाली ज्वार (चारा) की खेती हेतु किसानों के लिए जारी की एडवाइजरी

कानपुर(विशाल प्रदेश)चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी0आर0 सिंह के निर्देश के क्रम में चारा वैज्ञानिक डॉ हरीश चंद्र सिंह ने गर्मियों में बहु कटान वाली ज्वार (चारा) की खेती हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि गर्मियों के मौसम में हरे चारे की कमी हो जाती है ऐसे में दुधारू पशुओं के लिए इस मौसम में बहु कटान वाली ज्वार बहुत ही लाभप्रद होती है उन्होंने बताया कि भारत में 4% भूमि पर चारे की खेती की जाती है डॉ सिंह ने कहा कि ज्वार का चारा स्वाद व गुणवत्ता में बहुत अच्छा होता है जिसे पशु बहुत ही चाव के साथ खाते हैं डॉ सिंह ने बताया कि शुष्क भार के आधार पर ज्वार (चारे) में औसत 9 से 10% प्रोटीन, 8 से 17% शर्करा, 30 से 32% फाइबर, 36% सैलूलोज एवं 21 से 26इ हेमीसैलूलोज पाया जाता है उन्होंने बताया कि ज्वार (चारा) के बोने का

उत्तम समय मध्य अप्रैल से मध्य मई तक रहता है तथा इसका बीज 40 से 50 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर पड़ता है बहु कटान वाली चरी की किस्में जैसे- एस एस जी 59-3, एम पी चरी, पूसा चरी 23, सी एस एच 20- एमएफ, सी एस एच -24 एमएफ है उन्होंने बताया की बहू कटान चारे का उत्पादन 650 से 700 कुंतल प्रति हेक्टेयर हरा चारा तथा 150 से 200 कुंतल सूखा चारा प्रति हेक्टेयर उत्पादन होता है उन्होंने पशुपालकों को सावधान करते हुए बताया की ज्वार में हाइड्रोसाइएनिक असुरक्षित मात्रा में विद्यमान रहता है तथा इसकी अधिक सांद्रता पशुओं के लिए हानिकारक होती है उन्होंने बताया कि हाइड्रोसाइएनिक अम्ल की सांद्रता यदि चारे में 200 पीपीएम से अधिक है तो यह हानिकारक होती है डॉ सिंह ने बताया कि प्रायः बहु कटान चारा ज्वार के गुण तथा सिंचाई की दशाओं में खेती करने के कारण बुवाई के 50 से 60 दिन में पशुओं के खिलाने योग हो जाती है।लेकिन यदि जमीन में नमी की कमी रहती है तो फसल में विषैला तत्व जमा हो जाता है तथा सूखे की दशा में कटाई के बाद आने वाले कल्लों में हाइड्रोसाइएनिक अम्ल की सांद्रता अधिक होती है अतः किसान भाई कटाई से पहले सिंचाई करें तथा कटाई के बाद हरे चारे को 4 से 5 घंटे धूप में रखें तत्पश्चात अन्य चारे के साथ उचित मात्रा में मिलाकर पशुओं को खिलाना चाहिए।

राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • शुक्रवार • 9 अप्रैल • 2021

ज्वार के चारे में हाइड्रोसाइएनिक की अधिकता पशुओं के लिए हानिकारक

सीएसए ने चारा फसल ज्वार की खेती को लेकर जारी की एडवाइजरी

ज्वार की फसल। फोटो : एसएनबी

कानपुर (एसएनबी)। पशुओं के लिए बेहतर चारे के तौर पर उगाये जाने वाले ज्वार में हाइड्रोसाइएनिक असुरक्षित मात्रा में विद्यमान रहता है तथा इसकी सांद्रता पशुओं के लिए हानिकारक होती है। ज्वार के चारे में यदि हाइड्रोसाइएनिक अम्ल की सांद्रता 200 पीपीएम से अधिक है तो यह हानिकारक होती है।

सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के चारा वैज्ञानिक डॉ.हरिश्चन्द्र सिंह ने गर्मियों में बहुकटान वाली ज्वार (चारा) की खेती को लेकर जारी एडवाइजरी में कहा है कि यदि जमीन में नमी की कमी रहती है तो फसल में विषैला तत्व जमा हो जाता है। तथा सूखे की दशा में कटाई के बाद आने वाले कल्लों में हाइड्रोसाइएनिक अम्ल की सांद्रता अधिक होती है। इसलिए किसानों को कटाई से पहले सिंचाई अवश्य करना चाहिए। कटाई के बाद हरे चारे को 4-5 घंटे धूप में रखना भी जरूरी है। इसके बाद ही अन्य चारे के साथ इसे मिलाकर पशुओं को खिलाना चाहिए।

डॉ. सिंह के अनुसार गर्मियों के मौसम में हरे चारे की कमी के कारण दुधारू पशुओं के लिए बहु कटान वाली ज्वार बहुत ही लाभप्रद होती है। ज्वार चारा स्वाद व गुणवत्ता में अच्छा होने के कारण पशु इसे बहुत ही चाव से खाते हैं। उनके मुताबिक शुष्क भार के आधार पर ज्वार में औसत 9 से 10 फीसद प्रोटीन, 8 से 17 फीसद शर्करा, 30 से 32 फीसद फाइबर, 36 फीसद सैलूलोज एवं 21 से 26 फीसद हेमीसैलूलोज पाया जाता है। ज्वार के बोने का उत्तम समय मध्य अप्रैल से मध्य मई तक रहता है। प्रति हेक्टेयर 40 से 50 किग्रा बीज की आवश्यकता होती है। बहू कटान चारे का उत्पादन 650 से 700 कुंतल प्रति हेक्टेयर हरा चारा तथा 150 से 200 कुंतल सूखा चारा प्रति हेक्टेयर उत्पादन होता है।

हिन्दी दैनिक

R.N.I.No-UPHIN/2012/42725

हिन्दुस्तान का इतिहास

कानपुर से प्रकाशित

क 335 ● कानपुर शुक्रवार 9 अप्रैल, 2021 - पृष्ठ: 8 - मूल्य: 1.00 रु.

चारा वैज्ञानिक डॉ हरीश चंद्र सिंह ने गर्मियों में बहुकटान वाली ज्वार (चारा) की खेती हेतु किसानों के लिए जारी की एडवाइजरी

कानपुर-चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी0आर0 सिंह के निर्देश के क्रम में चारा वैज्ञानिक डॉ हरीश चंद्र सिंह ने गर्मियों में बहु कटान वाली ज्वार (चारा) की खेती हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि गर्मियों के मौसम में हरे चारे की कमी हो जाती है ऐसे में दुधारु पशुओं के लिए इस मौसम में बहु कटान वाली ज्वार बहुत ही लाभप्रद होती है उन्होंने बताया कि भारत में 4ल भूमि पर चारे की खेती की जाती है डॉ सिंह ने कहा कि ज्वार का चारा स्वाद व गुणवत्ता में बहुत अच्छा होता है जिसे पशु बहुत ही चाव के साथ खाते हैं डॉ सिंह ने बताया कि शुष्क भार के आधार पर ज्वार (चारे) में औसत 9 से 10ल प्रोटीन, 8 से 17ल शर्करा, 30 से 32ल फाइबर, 36ल सैलूलोज एवं 21 से 26ल हेमीसैलूलोज पाया जाता है उन्होंने बताया कि ज्वार (चारा) के बोने का उत्तम समय मध्य अप्रैल से मध्य मई तक रहता है तथा इसका बीज 40 से 50 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर पड़ता है बहु कटान वाली चरी की किस्में जैसे- एस एस जी 59-3, एम पी चरी, पूसा चरी 23, सी एस एच 20- एमएफ, सी एस एच -24 एमएफ है उन्होंने बताया की बहू कटान चारे का उत्पादन 650 से 700 कुंतल प्रति हेक्टेयर हरा चारा तथा 150 से 200 कुंतल सूखा चारा प्रति हेक्टेयर उत्पादन होता है उन्होंने पशुपालकों को सावधान करते हुए बताया की ज्वार में हाइड्रोसाइएनिक असुरक्षित मात्रा में विद्यमान रहता है तथा इसकी अधिक सांद्रता पशुओं के लिए हानिकारक होती है उन्होंने बताया कि हाइड्रोसाइएनिक अम्ल की सांद्रता यदि चारे में 200 पीपीएम से अधिक है तो यह हानिकारक होती है डॉ सिंह ने बताया कि प्रायः बहु कटान चारा ज्वार के गुण तथा सिंचाई की दशाओं में खेती करने के कारण बुवाई के 50 से 60 दिन में पशुओं के खिलाने योग हो जाती है लेकिन यदि जमीन में नमी की कमी रहती है तो फसल में विषैला तत्व जमा हो जाता है तथा सूखे की दशा में कटाई के बाद आने वाले कल्लों में हाइड्रोसाइएनिक अम्ल की सांद्रता अधिक होती है अतः किसान भाई कटाई से पहले सिंचाई करें तथा कटाई के बाद हरे चारे को 4 से 5 घंटे धूप में रखें तत्पश्चात अन्य चारे के साथ उचित मात्रा में मिलाकर पशुओं को खिलाना चाहिए।

09 april_jan express.pdf - Read-only

जन एक्सप्रेस

janexpressdive

शनिवार, गुरुवार, 09 अप्रैल, 2021 वर्ष : 12, अंक : 175, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹ 3.00/-

www.janexpressdive.com/epaper

पशु बहुत ही चाव के साथ खाते हैं 'ज्वार का चारा'

जन एक्सप्रेस संवाददाता

बहू कटान चारे का उत्पादन 650 से 700 कुंतल प्रति हेक्टेयर हरा चारा तथा 150 से 200 कुंतल सूखा चारा प्रति हेक्टेयर उत्पादन होता है वहीं बहु कटान वाले चारे की किस्में एस एस जी 59-3, एम पी चरी, पूसा चरी 23, सी एस एच 20- एमएफ, सी एस एच -24 एमएफ है।

कानपुर नगर। गर्मियों के मौसम में हरे चारे की कमी हो जाती है जिससे दुधारू पशुओं के लिए इस मौसम में बहु कटान वाली ज्वार बहुत ही लाभप्रद होती है ज्वार का चारा स्वाद व गुणवत्ता में बहुत अच्छा होता है जिससे पशु इसे बहुत ही चाव के साथ खाते हैं। यह जानकारी सीएसएयू के कुलपति डॉ. डी. आर. सिंह के निर्देश के क्रम में गुरुवार को वैज्ञानिक डॉ. हरीश चंद्र सिंह ने किसानों के लिए एडवाइजरी जारी करते हुए दी। उन्होंने बताया कि शुष्क भार के आधार पर ज्वार (चारे) में औसत 9 से 10 फीसदी प्रोटीन, 8 से 17 फीसदी शर्करा, 30 से 32 फीसदी फाइबर, 36 फीसदी सैलूलोज तथा 21 से 26 फीसदी हेमीसैलूलोज पाया जाता है।

उन्होंने किसानों को बताया कि प्रायः बहु कटान चारा ज्वार के गुण तथा सिंचाई की दशाओं में खेती करने के कारण बुवाई के 50 से 60 दिन में पशुओं के खिलाने योग हो जाता है लेकिन यदि जमीन में नमी की कमी हो जाती है तो फसल में विषैला तत्व जमा हो जाता है तथा सूखे की दशा में कटाई के बाद आने वाले कल्लों में हाइड्रोसाइएनिक अम्ल की सांद्रता अधिक होती है। इसलिए कटाई से पहले सिंचाई करने तथा कटाई के बाद हरे चारे को 4 से 5 घंटे धूप में रखने की सलाह दी।